अब संरक्षित होगी त्योंथर की कोलगढ़ी

राम लखन गुप्त

प्रदेश के उत्तरी प्रवेश द्वार पर स्थित रीवा जिले की त्योंथर तहसील की पुरासम्पदा प्राचीन भारतीय इतिहास की अमर निशानी है, जो हमारे वैभव एवं समसामयिक संस्कृति को उजागर करती है। हमारी संस्कृति की अवधारणा सदैव से ही सहयोग, बन्धुत्व एवं जनकल्याणकारी की रही है, जिसका प्रभाव आदि मानव की सभ्यता में परिलक्षित होता है। त्योंथर अंचल की विन्ध्य पर्वत श्रृंखला में अनेकों स्थान पर बने भित्तिचित्र आदि मानव की कल्पनाशीलता तथा सामयिक घटनाओं को प्रकट करता है। त्योंथर की प्राचीन कोलगढ़ी जो कि आदिवासी राज संस्कृति की धरोहर है, उसे संरक्षित करने की मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की घोषणा सराहनीय है।

जिला पुरातत्व संघ के सदस्य एवं आंचलिक पत्रकार होने के नाते राम लखन गुप्त (चाकघाट) ने त्योंथर की इस प्राचीन गढ़ी (किला) एवं भित्तिचित्र सहित पुरासम्पदा को संरक्षित करने की माँग पूर्व में की थी। त्योंथर अंचल के ढखरा जंगल, बौद्ध स्थल देऊर, झिरिया पहाड़, बड़ागाँव के मुरली जंगल आदि स्थानों पर दहाड़ की गुफाओं एवं बाहर निकले चट्टानों (अरी) में शैलाश्रय के भीतर लाल गेरू रंग में अनेक भित्तिचित्र दिखाई देते हैं। कुछ स्थानों पर ये भित्तिचित्र काले रंग में भी परिलक्षित होते हैं। ये भित्तिचित्र विकसित आदिवासी संस्कृति के प्रमाण हैं। देऊर के भित्तिचित्र जहाँ मांगलिक कार्यों में बनाए जाने वाले प्रतीक चिन्ह की तरह दिखते हैं तो ढखरा जंगल के भित्तिचित्र पूरे जनजीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। गाँव की रक्षा हेतु नर-नारी दोनों का सामूहिक प्रयास, एक मानव के सिर पर मुकुट जैसी आकृति बनाकर उसे विशिष्ट सिद्ध करने का प्रयास, जानवरों का शिकार, चहारदीवारी छलांग कर भागता जानवर, भयभीत ग्रामवासी चारपाया (जानवर) से चारपायी की कल्पना आदि चित्र दिखलायी पड़ते हैं।

त्योंथर (रीवा) की कोलगढ़ी

इस अंचल की प्राचीन सभ्यता में त्योंथर की गढ़ी जो टमस नदी के किनारे पर बनी है आज भी आकर्षण एवं आदिवासी वैभव का प्रतीक है। गढ़ी का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर खुलता है। भैरवनाथ का मंदिर, हथिया पवन एवं अविनाश सिंह एडवोकेट के मकान के समीप दिखने वाली प्राचीन दीवार यह बताती है कि गढ़ी की सुरक्षा के लिए कोई महत्वपूर्ण परकोटा (चहारदीवारी) बनी रही होगी। गढ़ी के समीप प्राचीन टीले से एन.बी.पी. काल के मृदभांड टुकड़े भी मिलते हैं, जिसे ईसा पूर्व से सम्बद्ध किया जाता है। गढ़ी आज भी लगभग 70 प्रतिशत स्थिति में ठीक एवं सुरक्षित है। गढ़ी की बुर्जी से टमस नदी का विहंगम दृष्य ठीक उसी तरह दिखता है जैसा इलाहाबाद के गंगा-यमुना तट पर बने अकबर के किले से जहाँ से गंगा-यमुना की धाराओं का आनन्द लिया जाता रहा है। त्योंथर की इस किले (गढ़ी) के बारे में जहाँ तक जनश्रुति का प्रबल आधार है वह इस किले के स्वामित्व को लेकर है। गढ़ी की दीवारों में लगे पाषाणखण्ड का यदि सूक्ष्म अवलोकन किया जाए तो पाषाणखण्ड में प्राचीन भवन अथवा मंदिर जैसी कलाकृति दिखती है। जहाँ-तहाँ उकेरी गई मूर्तियों एवं प्रतीक चिन्हों से चित्रित पाषाणखण्ड के अवशेष किले में दिखते हैं जो यह सिद्ध करता है कि यह किला (गढ़ी) पुनर्निर्मित (पुनः बनाया गया) है।

इस किले पर कोल राजा का आधिपत्य था जिसके कारण इसे कोलगढ़ी कहा जाता है। इस गढ़ी में कोल (आदिवासी) राजा का स्वामित्व यह बताता है कि यहाँ कोल समाज का वर्चस्व था। रामायण काल में भी निषाद राज को राजा का दर्जा प्राप्त था। उसके पास भी सेनाएँ थीं जो राजा भरत से मोर्चा लेने को तैयार हो गई थी- 'बजवा दो रण का नक्कारा होने दो गंगा पार नहीं'। उसी गंगा नदी के सानिध्य में लगे हुए इस क्षेत्र में तमसा नदी के तट पर बना किला (गढ़ी) कोल राजा की समृद्धि का प्रतीक है। कहा जाता है कि वर्तमान उत्तर प्रदेश की ओर से आने वाले बेनवंशी राजा इस अंचल में अपना वर्चस्व बनाने के लिए किला चाहते थे। माना जाता है कि जिस

बौद्ध स्मारक देऊर स्थित भित्तिचित्र

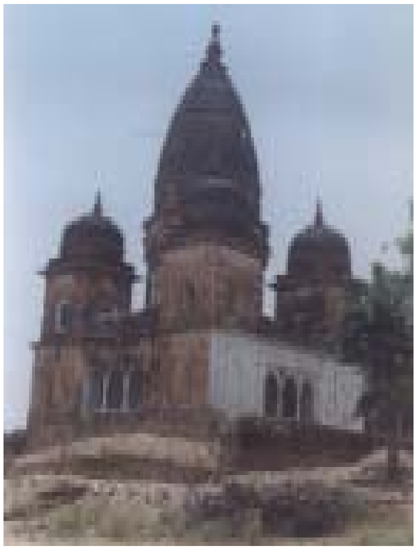

त्योंथर का भुवनिहा मंदिर

राजा के पास स्वयं का किला न हो तो उसे ताकतवर नहीं समझा जाता था। बेनवंशी राजाओं की ताकत इतनी नहीं रही कि वे सीधे युद्ध करके किला जीत लेते। किला प्राप्त करने के लिए उन्होंने एक चाल चली। कोल राजा की कन्या से विवाह करने का प्रस्ताव रखा गया। कोल राजा ने बारातियों के स्वागत में किले का द्वार खोल दिया। बारातियों का स्वागत-सत्कार हुआ। खुशी के इस मौके पर मदिरा का दौर चला। कूटनीति के तहत कन्या पक्ष को मदिरा से मदहोश कर दिया गया उसके पश्चात बारातियों के वेश में छिपे सैनिकों ने हमला बोलकर उन्हें मौत के घाट उतार दिया तथा किले पर अपना कब्जा कर लिया। त्योंथर की गढ़ी में कब्जा करने वाले लोगों का गंगा पार अरैल से संबंध रहा, जहाँ से भूरिश्रवा की बहुमूल्य 'विजायट' त्योंथर किले में आई थी। हो सकता है कि उस 'विजायट' को सुरक्षित रखने के लिए ही त्योंथर के किले को उपयुक्त स्थान माना गया रहा होगा जिसे हर हाल में प्राप्त करने के लिए बारातियों के वेश में सैनिक कार्रवाई हुई थी।

कोल समाज की समृद्धि एवं वैभव के प्रतीक रहे इस गढ़ी को वर्तमान में अतिक्रमणकारियों ने काफी क्षति पहुँचाया है। गढ़ी में लगी भवन सामग्री लोग उठा ले गए।

त्योंथर की कोलगढ़ी का ऊपरी कक्ष

सभी छाया : रामलखन गुप्त, रीवा

किले से नदी तक जाने का गुप्त मार्ग भी धूल-कचरा से भर गया है। पुरानी मजिस्ट्रेटी (पद्मधर पार्क त्योंथर) के पीछे इस गढ़ी में पहले ए.डी.आई. कार्यालय लगता था। गढ़ी के समीप शा. कन्या विद्यालय बना है। इस लेख के लेखक एवं जिला पुरातत्व संघ के सदस्य राम लखन गुप्त द्वारा इसे संरक्षित करने की बराबर माँग की जाती रही है।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने त्योंथर तहसील के ग्राम डभौरा में अखिल भारतीय आदिवासी कोल समाज सेवा संघ द्वारा आयोजित अमर शहीद बिरसा मुण्डा शहादत दिवस पर कोल महासम्मेलन को संबोधित करते हुए त्योंथर स्थित ऐतिहासिक कोलगढ़ी को संरक्षित करने तथा कोलभित्ति चित्रों को सामने लाने के जरूरी उपाय करने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की इस घोषणा से इस अंचल की ऐतिहासिक गढ़ी को जहाँ भव्य रूप प्राप्त होगा वहीं आदिवासी संस्कृति को विश्व इतिहास के पटल पर रखने का सुअवसर प्राप्त होगा। त्योंथर अंचल ऐतिहासिक विरासत से तो परिपूर्ण है ही बल्कि नदी, पहाड़, झरना, जंगल आदि प्राकृतिक सम्पदाओं से भी सम्पन्न है जो देशी-विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट करेगा।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)